# प्रदेश में 31 जिलों के 90% अनाज भंडारण कीटग्रस्त

## रिपोर्ट में खुलासा : हर साल खराब होता है 10.94 लाख टन खाद्यान्न

• यादवेंद्रसिंह राठौड़ . सीकर

यह रिपोर्ट किसानों को डराने वाली और सरकारी व्यवस्था को आईना दिखाती है। प्रदेश में अनाज भंडारण के लिए किसानों के पास सुरक्षित भंडारण नहीं हैं। किसान परंपरागत तरीकों से अनाज का भंडारण करते हैं। नतीजा है कि प्रदेश के 31 जिलों में किसानों के 90 प्रतिशत अनाज भंडारगृह कीटग्रस्त हैं।

इस वजह से हर साल कीट राज्य में करीब 10.94 लाख टन खाद्यान्न चट कर जाते हैं। लंबे समय तक भंडारण नहीं करने पाने से किसानों को उत्पादन का सही मूल्य नहीं पाता है। क्योंकि किसान खरीफ व रबी की फसल आते ही बाजार और मंडियों में बेच देते हैं। **यह रिपोर्ट भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के लिए श्रीकर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर के पूर्व डीन एवं कीट वैज्ञानिक एमसी भार्गव ने तैयार की है।** इसके लिए वे अपने डॉ. रवि चौधरी, एसआर यादव आदि के साथ 33 जिलों के पांच-पांच गांवों के किसानों के अनाज भंडारगृहों का अध्ययन किया। रिपोर्ट को बायो इकोलॉजी एंड मैनेजमेंट ऑफ स्टोर्ड ग्रेन पेस्ट्स ऑन डिफरेंट कमोडिटीज इन राजस्थान के प्रोजेक्ट नाम दिया है। इस पर आईसीएआर ने करीब 17 लाख रुपए खर्च किए। रिपोर्ट में बताया कि दो जिलों श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में भंडारण विधि अच्छी है। क्योंकि यहां लोहे के टंकीनुमा पात्र का उपयोग करते हैं। इससे नमी, आद्रता का असर नहीं होता है। इसमें कीटों का आसानी से प्रवेश नहीं होता है।

**श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ में अनाज भंडारण विधि अच्छी है। क्योंकि यहां लोहे के टंकीनुमा पात्र का उपयोग करते हैं। इससे नमी, आद्रता का असर नहीं होता है।**

हमने रिपोर्ट तैयार करके आईसीएआर को भेज दी है। आईसीएआर और कृषि विभाग को इसे राज्य में लागू करना चाहिए। राजस्थान के किसानों को खाद्यान भंडारण की अत्याधुनिक तकनीक व अनाज सुरक्षा के उपायों का प्रचार-प्रसार करना चाहिए। सरकार को तहसील स्तर पर भंडार गृह बनाने चाहिए जिनमें न्यूनतम दरों पर किसान अपनी उपज रख सके। **डॉ. एम.सी. भार्गव**, पूर्व डीन एवं कीट वैज्ञानिक, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विवि, जोबनेर

### कारण

#### कच्ची कोठी और कमरों में भंडारण से पनपते हैं कीट

रिपोर्ट के अनुसार किसान मिट्टी की कच्ची कोठी, जूट की बोरी, बांस की कोठी, बखारी, कमरों में भंडारण करते हैं। इससे अनाज में इल्ली (लेसर ग्रेन बोरर), धान की सुरहरी (राइस विविल), खपरा, धनेरिया, शलभ, मोथ आदि रोग लगने से काफी खराबा हो जाता है। इस तकनीक में कीट आसानी से प्रवेश करने के साथ ही खुले में नमी, सीलन, हवा व आद्रता के चलते इल्लियां व अन्य कीटों के विकास में अनुकूल परिस्थितियां बनती है। अनाज में कीड़े लगने के साथ ही साथ ही किसानों द्वारा भंडारित दलहन में भी बड़े मात्रा में घुण (पल्स बीटल) का प्रकोप पाया जाता है। सोयाबीन, सरसों, तारामीरा, तिल, अरंडी सहित अन्य तिलहन फसलों में कीट कम लगते हैं।

### सलाह : सामान्य उपाय से बचाएं अनाज को

किसान कुछ पेड़-पौधों की पत्तियों, बीजों व निम्बोली व छाल से बनाए पाउडर का उपयोग कर बिना खर्चे के भी अनाज भंडारण कर सकता है। अप्रैल से लेकर नवंबर तक अनाज और दलहन में सबसे ज्यादा कीट व रोग लगते हैं। नीम, करंज, केस्टर, जीरा, लेमन ग्रास, मसालों, उंडी एक्सटेक्ट के पत्तियों, छाल व निम्बोलियां का पाउडर बनाकर रखने से अनाज खराब नहीं होता है। करीब 32 प्रकार के पौधों में कीटनाशक तत्व मौजूद होते हैं। सरसों का तेल, मूंगफली का तेल, यूकेलिप्टिस ऑयल, ऑरेंज ऑयल को एक एमएल प्रति किलो दलहन में मिलाकर रखने से घुन नहीं लगता है।

- खाक्षान्न को धूप में अच्छी तरह से सूखाकर इसकी नमी को 10 प्रतिशत तक कम कर फिर गोदाम में भंडारण करें।
- गोदाम में खुला व बिखरा हुआ अनाज नहीं छोड़ें।
- भंडारगृह के छिद्र या फर्श पर गड्ढे को सीमेंट से भरें।
- **भंडार गृह की सफाई करते समय 0.1 प्रतिशत मैलाथियान के घोल से कच्ची कोठी, कमरे व जूट की बोरियों को उपचारित करें। बोरियों को पुराने गोदाम से दूर रखें व दीवार से सटाकर नहीं रखें।**
- **गोदाम व भंडारगृह के रोशनदान एवं खिड़कियों को बारिश में खुला नहीं रखें।**
- **लकड़ी के पट्टे या प्लास्टिक शीट बिछाकर इडीबी का धुंआ करें।**
- भंडारित अनाज खराब हो जाए तो साफ कर वैज्ञानिक तरीके से भंडारित करें।

## सब्जी की खेती से रुका श्रमिकों का पलायन

• भास्कर न्यूज . बांसवाड़ा

घाटोल की रूजियां व दुदका ग्राम पंचायत के गांवों में किसानों ने परंपरागत कृषि के साथ ही सब्जी की खेती को अपनाया है। अब सब्जी पैदावार शुरू करने के साथ किसानों की आय में वृद्धि हुई है। इन गांवों के किसान टमाटर, मूली, पालक, लौकी व गाजर की खेती कर रहे हैं। बारिश में लगभग डेढ़-दो माह पूर्व लगाई गई बैंगन, टमाटर व हरी मिर्च पककर तैयार हो गई हैं। सब्जी शहर से लेकर घाटोल, गनोड़ा, पालोदा, डूंगरपुर के आसपुर और उदयपुर मार्ग के गांवों तक बिकने जाती हैं। किसान मंगलाभाई निनामा बताते हैं कि पिछले साल एक माह तक उन्होंने 4 क्विंटल टमाटर प्रतिदिन बांसवाड़ा मंडी में ले जाकर बेचे हैं। उनके 4 बेटे-बेटियों को वे इसी आय से ही पढ़ा रहे हैं।

**बांसवाड़ा जिले में मौसम परिवर्तन के बाद से खेतों में हरी सब्जियों की बुआई ज्यादा बढ़ी**

गांव में कुछ किसान सब्जी पैदावार की आय से बड़े वाहन व ट्रैक्टर भी ले आए। सब्जियों के प्रति रूझान बढ़ने और कमाई अच्छी होने से रोजगार के लिए गुजरात जाने वालों का पलायन थमा है। किसानों ने बताया कि परंपरागत कृषि के दौरान गेहूं, मक्का-चने की फसल कट जाने के बाद युवक रोजगार के लिए पड़ौसी राज्यों गुजरात-मप्र पलायन कर जाते थे, परंतु सब्जी की पैदावार रास आने से अब पलायन पर अंकुश लगा है।

**भीलवाड़ा**

## इस बार कपास की 3 गुना ज्यादा बुआई

• ओमप्रकाश शर्मा . भीलवाड़ा

जिले के खेतों में कपास की चुनाई शुरू हो चुकी है। किसी समय कपास उत्पादन में प्रदेश में अव्वल रहे भीलवाड़ा जिले के किसानों ने एक बार तो इससे मुंह मोड़ लिया था। लेकिन बांग्लादेश से आयात कम होने और अंतरराष्ट्रीय बाजार में मांग बढ़ने से फिर से किसानों का रुख कपास की खेती की ओर बढ़ा है। 2010 में जिले में 12,909 हैक्टेयर के मुकाबले 2015 में तीन गुना अधिक करीब 45000 हैक्टेयर में कपास की बुआई की गई है।

**26 लाख क्विंटल उत्पादन का अनुमान** : गंगानगर और हनुमानगढ़ के बाद भीलवाड़ा जिले में कपास की सर्वाधिक बुआई की गई। राजस्व विभाग अजमेर के पूर्वानुमान के अनुसार प्रदेश में इस वर्ष 4 लाख 13 हजार 348 हैक्टेयर में बुआई की थी। इसमें 26 लाख 12 हजार 360 क्विंटल अनुमानित उत्पादन माना है। 1 लाख 63 हजार 650 क्विंटल कपास उत्पादन का पूर्वानुमान जिले में लगाया गया है।

**सीकर**

## दिसंबर में इन बातों का ध्यान रखें पशुपालक

• भास्कर न्यूज . सीकर

सर्दियों के मौसम में पशु पालकों के सामने पशुधन को सर्दी से बचाने की सबसे बड़ी चुनौती होती है। विशेषज्ञों के अनुसार इस मौसम में ये सावधानी बरतनी चाहिए : ▪ रात में पशुओं को खुले स्थान में न रखें। सर्दी रहित स्थान पर बांधे। ▪ पशुओं को खनिज लवण मिश्रण निर्धारित मात्रा में दें। ▪ दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए पूरा दूध निकालें, और दूध दुहने के बाद थनों को कीटाणु नाशक घोल में धो लें। ▪ पशु आहार में एक चम्मच नमक का मिश्रण मिला दें। ▪ हरे चारे की मात्रा नियंत्रित ही रखें व सूखे चारे की मात्रा बढ़ा दें।

**भरतपुर**

## खाड़ी देशों की पसंद छोंकरवाड़ा के अमरूद

• रामनाथ किरोड़वाल . भरतपुर

छोंकरवाड़ा क्षेत्र का अमरूद खाड़ी देशों में भी पसंद है। यहां का लखनऊ-49 किस्म का अमरूद मिठास और बड़े आकार के लिए प्रसिद्ध है। छोंकरवाड़ा के किसान व पूर्व जिला प्रमुख द्वारिका प्रसाद गोयल ने तीन साल पहले 20 बीघा में बागवानी शुरू की। यूपी से अमरूद की लखनऊ-49 किस्म की पौध मंगाई। अमरूद का वजन 400 से 500 ग्राम और स्वाद भी मीठा था। शुरुआत में महवा के मंडी में माल भेजा। बाजार दर से चार-पांच रुपया प्रति किलो ज्यादा में बिका। फिर माल दिल्ली ले गए। वहां एक्सपोर्ट व्यापारियों को पसंद आया। अब यहां का अमरूद सउदी अरब सहित कई खाड़ी देशों में जा रहा है। इस किस्म को नैवाड़ा, नगर हरसुख, बिजवारी, अलीपुर, बबेसर , लखनपुर, हलैना, पथैना के किसानों ने भी लगाया है। एक बीघा में 50 से 75 हजार रुपए की आय होती है। अक्टूबर से मार्च माह पैदावार का समय है।

## श्री विधि से गेहूं की बुआई उर्वरक नहीं, उपज अधिक

• राजकुमार जैन . अलवर

श्री विधि तकनीक गेहूं में कारगर है। परंपरागत खेती की तुलना में इस विधि से बुआई का खर्च चौथाई से भी कम है। उपज भी डेढ़ गुना ज्यादा मिलती है। किसान प्रदीप पुंडीर ने बताया कि एक बीघा में बुआई के लिए मात्र 6 किलो गेहूं बीज की जरूरत है और उपज 22 क्विंटल प्रति बीघा हो रही है, जबकि परंपरागत विधि में 40 किलो बीज बुआई के लिए चाहिए और पैदावार 15 से 16 क्विंटल होती है।

**बीज उपचार** : एक बीघा के लिए 6 किलो बीज को साफ करके करीब 10 लीटर गुनगुने पानी में डालें। इसमें एक किलो वर्मी कंपोस्ट खाद और एक किलो गुड़ व एक लीटर गौमूत्र मिलाकर 8 घंटे छोड़ दें। इसे छानकर अलग कर लें। 10 ग्राम फफूंदी नाशक मिलाकर बीज अंकुरित होने के लिए गीले बोरे में बांध दें। बुआई के लिए पर्याप्त नमी जरूरी है। खेत में कतार से 8 इंच व बीज से बीज की दूरी 8 इंच होनी चाहिए। एक जगह पर 2 बीज डालना जरूरी है।

## जनवरी में इंदौर में होगी ग्लोबल बांस समिट

**देश** की पहली ग्लोबल बांस समिट 29 से 31 जनवरी, 2016 तक इंदौर में होगी। इंडिया फेडरेशन ऑफ ग्रीन एनर्जी तथा मध्यप्रदेश बांस मिशन के संयुक्त तत्वावधान में होने वाले समिट की विषय वस्तु 'बंबू फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट- ग्लोबल को-ऑपरेशन' (टिकाऊ विकास के लिए बांस - वैश्विक सहयोग) पर केंद्रित रहेगी। समिट का उद्देश्य बांस उत्पादकों और बांस कारोबारियों को विश्व स्तरीय नेटवर्क से जोड़ना है। बांस उत्पादकों, कारीगरों, उद्यमियों को विचार-विमर्श के लिए मंच उपलब्ध कराना है।

## बाजरे के उत्पादन में आगे हम बीज आता है दक्षिण भारत से

### 95 फीसदी सप्लाई करते हैं दक्षिण राज्य, देसी प्रजाति लगभग खत्म

• हितेन्द्र शर्मा . जयपुर

राजस्थान की पहचान उसकी संस्कृति से तो है ही, लेकिन सर्दी का मौसम आते ही यहां की फिजाओं में पारंपरिक खानपान की खुशबू भी महकने लगती है। खासतौर से बाजरे की रोटी और खीचड़े का जायका। लेकिन खेतों में ज्यादा पैदावार की जरूरत ने बाजरे की देसी किस्मों को विलुप्त-सा कर दिया है। आज रेत के धोरों में दक्षिण भारत की किस्मों का राज है।

चिंताएं यह हैं कि राजस्थान की पहचान उसकी मीठी बाजरी से थी, लेकिन अब यह हमारी रसोई से गायब है। यहां गौर करने लायक तथ्य यह है कि 95 फीसदी हिस्सा आंध्रप्रदेश, तेलंगाना व दक्षिण भारत के अन्य राज्यों से मंगवाते हैं। सालों से लगातार ऐसा होने से प्रदेश के अलग-अलग इलाकों में उगाई जाने वाली देसी बाजरी लगभग खत्म हो गई है। कृषि व बीज उत्पादन से जुड़े एक्सपर्ट इसका कारण क्रॉस-पॉलिनेशन बता रहे हैं।

### कम है पैदावार, इसलिए आंध्र की किस्में

देसी बाजरे या बाजरी के खत्म होने के पीछे एक्सपर्ट कम उपज को जिम्मेदार मानते हैं। राजस्थान बीज निगम (आरएसएससी) के सीनियर मैनेजर (प्रॉडक्शन)नवल किशोर शर्मा के मुताबिक देसी बाजरे की उपज एफ-1 किस्मों के मुकाबले चौथाई ही है। ऐसे में किसान अब देसी बाजरा बोना पसंद नहीं करते। भोपालगढ़ (जोधपुर) के आसोप के किसान सत्यनारायण शर्मा के मुताबिक देसी बाजरा जिसे स्थानीय लोग बाजरी भी कहते हैं। बारीक दाना होने के कारण इसकी उपज हाईब्रिड व एफ-1 किस्म के मुकाबले आधी ही है। यह बात सही है कि देसी बाजरा खाने में स्वादिष्ट होता है लेकिन कम पैदावार के चलते बहुत ही कम मिलता है। अब लोगों को उस बाजरे का स्वाद भी याद नहीं रहा।

## 30 हेक्टेयर में दो करोड़ की पैदावार की उम्मीद

### खारे पानी से अनार की खेती

• ओमप्रकाश विश्नोई . सांचौर

सांचौर में खारे पानी की समस्या है। पीने का पानी भी 20 से 25 किमी दूर टैंकरों से पानी आता है। दाता गांव में भूमिगत जलस्तर खारा होने से जीरा, रायड़ा, ईसबगोल, गेहूं की उपज नहीं हो रही थी। किसानों ने महाराष्ट्र के नासिक जिले में होने वाली सिंदूरी अनार की खेती शुरू की। शुरुआत पांच किसानों ने की। अब 200 किसान खेती कर रहे हैं। किसानों ने बूंद-बूंद सिंचाई अपनाई। तीन साल में अच्छी पैदावार पर किसानों ने इसे अपनाया। जनवरी में करीबन 30 हेक्टेयर में अनार से करीब 2 करोड़ 10 लाख की पैदावार मिलने की उम्मीद है। किसान नागजीराम चौधरी व पाबूराम विश्नोई ने बताया कि गांव में पिछले 5 सालों से अनार की खेती कर रहे हैं। पानी खारा होने से पारंपरिक खेती नहीं कर पा रहे हैं, उसके बावजूद खारे पानी में अनार से हमें अच्छी आवक है।

**सवाल आपका, जवाब एक्सपर्ट का**

## सरसों : सफेद रोली से बचाने के लिए मेनकोजेब काम में लें

- **सरसों में सफेद रोली रोग के लिए क्या उपाय करें।**

रामनारायण यादव, अलवर

सरसों में मेनकोजेब दो ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें। एक हैक्टेयर में कम से कम 800 लीटर पानी छिड़कें।

- **अमरूद के बाग में फल छोटे-छोटे ही पक रहे हैं व कीड़े लग रहे हैं।**

यशवंत कुमार, रावतभाटा, कोटा

डाइमिथोएट एक एमएल प्रति लीटर या कार्बोरिल एक एमएल प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर फलों का आकार मटर के दाने के बराबर हो तो छिड़काव करें। दूसरा छिड़काव करीब एक माह बाद करें जिससे फलमक्खी अंडे नहीं दे पाएगी।

- **बीलपत्र के पौधे बढ़ नहीं रहे और अमरूद फल नहीं लग रहे हैं।**

सविता, डाबड़ा, नागौर

फलदार पौधों की कैनोपी के आकार के अनुसार निराई-गुड़ाई कर एफवाईएम व एनपीके खाद देवें और सिंचाई करें।

- **तीन साल के अनार के पेड़ के फल नहीं लग रहे हैं।**

नदीम खान

अनार के पौधों की जनवरी माह में आवश्यक रूप से कटाई-छंटाई करें। दिसम्बर में पानी नहीं दें। कम से कम 25 किलो प्रति पौधा एफवाईएम खाद व पांच सौ ग्राम एनपीके डालकर सिंचाई करें।

**एक्सपर्ट : हरलाल सिंह**, उपनिदेशक उद्यान, सीकर खंड
**हरदेव सिंह बाजिया**, कृषि अनुसंधान अधिकारी, सीकर

**योजना तरक्की के लिए**

### खेती में सुधार के लिए राष्ट्रीय कृषि टिकाऊ मिशन योजना (नमसा) की शुरुआत, पशुपालन और बागवानी को दिया जाएगा बढ़ावा

# अब कृषि से जुड़े हर काम पर फायदा लीजिए अनुदान का

• अशोक जलंधरा . श्रीगंगानगर

खेती में सुधार के लिए केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय कृषि टिकाऊ मिशन योजना (नमसा) की शुरुआत की है। राज्य सरकार ने इसे लागू कर दिया है। योजना के तहत सामान्य खेती के साथ पशुपालन, बागवानी, मत्स्य पालन, वानिकी को भी बढ़ावा मिलेगा। किसानों को विभिन्न योजनाओं में अनुदान भी दिया जाएगा। इसका मकसद किसानों को आर्थिक तौर पर स्वावलंबी बनाना है। इससे परंपरागत फसल पद्धति के साथ अन्य विकल्पों पर काम करने का मौका मिलेगा। योजना में प्रदेश के सभी जिलों में पहले साल 17100 हैक्टेयर में उन्नत कृषि की जाएगी। इसमें पशु आधारित समन्वित कृषि प्रणाली में 5900 हैक्टेयर, मत्स्य आधारित समन्वित कृषि प्रणाली के तहत 3500 हैक्टेयर और उद्यानिकी में 4300 और वानिकी आधारित समन्वित कृषि प्रणाली में 2900 हैक्टेयर में कृषि की है। कलस्टरों में प्रत्येक किसान को सिंचाई पानी की डिग्गी, ड्रिप, बिजली कनेक्शन अथवा सोलर पंप व पाइपों का जाल बिछाया जाएगा।

### जानिए योजना में किस तरह और कितने अनुदान का प्रावधान

फलदार पौधों में आदान की लागत का 50 प्रतिशत या अधिकतम 25 हजार रुपए प्रति हैक्टेयर अनुदान मिलेगा। फसल पद्धति के लिए आदान व्यय का 50 प्रतिशत अथवा 10 हजार रुपए अनुदान मिलेगा। इसके अलावा फसल पद्धति के साथ खेत की पेराफेरी में नींबू, करोंदा, अमरूद, पपीता, शीशम अथवा खेजड़ी, झाड़ीदार पौधे आदि उगाए जाएंगे। 50 प्रतिशत अनुदान अथवा अधिकतम 15 हजार रुपए अनुदान मिलेगा।

**पशु पालन आधारित कृषि पद्धति** : गाय भैंस के साथ मिश्रित खेती, चारा उपज ली जाएगी। पशु की कीमत का 50 प्रतिशत अथवा 40 हजार अनुदान मिलेगा। चारा उत्पादन में 10 हजार रुपए प्रति हैक्टेयर अनुदान मिलेगा। बकरी/भेड़/मुर्गी/बतख योजना में 25 हजार अनुदान मिलेगा। फसल पद्धति के तहत 10 हजार रुपए अनुदान अलग से देने का प्रावधान है। मछली पालन में डिग्गी/तालाब/फार्म पोंड में मछली पालन के साथ फलदार पौधे, सब्जियों का उत्पादन लिया जाएगा। मछली पालन की लागत का 50 प्रतिशत अथवा 25 हजार एवं फसल कंपोनेंट के लिए 25 हजार रुपए प्रति हैक्टेयर अनुदान मिलेगा। घास के लिए सरकार 15 हजार रुपए तक अनुदान देगी। घास कलम्स अविकानगर, काजरी तथा आईजीएफआरवाई झांसी से प्राप्त की जा सकेगी।

योजना के तहत प्रदेश के हर जिले में कलस्टर बनाकर किसानों का चयन किया जा रहा है। इसका मकसद किसानों को आर्थिक तौर पर मजबूत बनाना है। ताकि वे परंपरागत खेती के अलावा अन्य विकल्प अपनाकर नई शुरुआत कर सकें। इस योजना में अभी तक अकेले श्रीगंगानगर जिले के 550 हैक्टेयर (2200 बीघा) में समन्वित कृषि पद्धति अपनाई है।
- डॉ. मिलिंद सिंह, कृषि अनुसंधान अधिकारी श्रीगंगानगर

### चयन प्रक्रिया : अधिकतम दो हैक्टेयर पर मिलेगी सब्सिडी

लघु/सीमांत/एससी/एसटी/महिला किसानों को प्राथमिकता मिलेगी। लगभग 50 प्रतिशत आवंटित राशि का उपयोग लघु एवं सीमांत किसानों, 16 प्रतिशत एससी, 8 प्रतिशत एसटी किसानों के उपयोग में ली जाएगी। चयनित किसान को अधिकतम 2 हैक्टेयर पर सब्सिडी दी जाएगी। सहायता की अधिकतम राशि प्रति किसान एक लाख तक रहेगी। लेकिन खेत डिग्गी निर्माण, जीर्णोद्धार ऑन फार्म जल प्रबंधन गतिविधियों तथा पॉली हाउस निर्माण में यह सीमा लागू नहीं होगी। उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सहित जनजातीय क्षेत्रों में किसानों के चयन में न्यूनतम एक बीघा (0.25 हैक्टेयर) भूमि रखी जा सकती है। खेती के साथ फार्म पोंड निर्माण, महात्मा गांधी नरेगा कार्यक्रम के तहत निर्मित टैंक पोंड आदि की लाइनिंग, ट्यूबलर टाइप ग्रीन हाउस निर्माण, लो-टनल पॉली हाउस, मधुमक्खी पालन, पानी लिफ्ट करने के लिए डीजल या बिजली पंप, वर्मी कंपोस्ट इकाई की स्थापना एवं कृषक प्रशिक्षण होंगे। सभी मदों में सब्सिडी का प्रावधान है।

टीम एग्रो भास्कर | संपादन : सुरेंद्र चौधरी | लेआउट : सुनील सैन